Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.7282, Volume 09, No. 02, April, 2019, pp. 147-150

jktLFkku e /kkfed i;Vu dk irhd & djkyh

नरेन्द्र सिंह गुर्जर*

lkjka'k

धार्मिक स्थल राजस्थान की प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा के धरोहर है। बहुमूल्य/ स्थापित सद्भाव स्थल है। पर्यटन से प्राकृतिक सुरम्यता व सौन्दर्य से पूर्ण धार्मिक स्थल पर्यटकों की धार्मिक रुचि, क्रियाओं आध्यात्मिक जीवन व लोक–परलोक से सम्बन्धित धार्मिक दृष्टिकोण से अवगत कराते हैं। धर्म में प्रचलित आराध्य देव से सम्बन्धित मन्दिरों का निर्माण करवाया। धार्मिक स्थलों से सांस्कृतिक भौतिक व अभौतिक संस्कृति का ज्ञान होता है। धार्मिक पर्यटन स्थलों में उन मेले–त्यौहार को समय क्षेत्रीय लोक–सांस्कृतिक समारोह धर्म ने संस्कृति ने धार्मिक–आस्थाओं परम्पराओं और मान्यताओं को सुरक्षित रखा। धार्मिक स्थलों का अनूठा स्थापत्य धार्मिक सद्भाव। धार्मिक पर्यटन स्थल स्थानीय संस्कृति की अभिव्यक्ति है जिनके साथ प्राचीन परम्पराएँ तथा धार्मिक विचारधारायें जुड़ी रहती है। इनके प्रति जन समाज की गहरी भावात्मक आस्था होती है। समाज को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में पिरोकर सद्भाव, सम्भाव तथा उल्लास में अभिवृद्धि करते है।

ey 'kCn: *धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक परम्परा, सद्भाव, आस्था।*

———————————

iLrkouk

भारतीय प्राचीन ग्रंथों में स्पष्ट रूप से मानव के विकास, सुख और शांति की संतुष्टि व ज्ञान के लिए पर्यटन को अति आवश्यक माना गया है। हमारे देश के ऋषि मुनियों ने भी पर्यटन को प्रथम महत्व दिया है। प्राचीन गुरुओं (ब्राह्मण, ऋषि – तपस्वियों ने भी यह कह कर कि "बिना पर्यटन मानव अन्धकार प्रेमी होकर रह जायेगा" पाश्चात्य विद्वान् संत आगस्टिन ने तो यहाँ तक कह दिया है कि "बिना विश्व दर्शन ज्ञान ही अधुरा है।" पंचतंत्र नामक भारतीय साहित्य दर्शन में कहा गया है "विधाक्तिम शिल्पं तावन्नाप्यनोती मानवः सम्यक यावद ब्रजति न भुमो देशा–देशांतरः।"

विविधता में एकता के परिदृश्य का रूप भारत की संस्कृति व धार्मिक आस्था में सन्निहित है। पर्यटन रोजगार एवं वैश्विक संबंधों की आधारशिला है उसी प्रकार धार्मिक स्थानों का पर्यटन आध्यात्मिक व मानव के स्वाभाविक प्रवृत्ति, मोक्ष की प्राप्ति का। जो ईश्वरीय आस्था, प्रकृति और संस्कृति के मध्य एक रचनात्मक सम्पर्क स्थापित करता है तथा स्वांगीण व्यक्तित्व से विकास में सहायक रहता है।

पूर्वी राजपूताना की रियासत करौली – 1242 वर्ग मील क्षेत्रफल में $26^{0}3'$ और $26^{0}49'$ उत्तरी और $76^{0}34'$ और $77^{0}44'$ पूर्वी अक्षांश पर स्थित है। जिसके उत्तर में भरतपुर, उत्तर–पश्चिम और पश्चिम में जयपुर, दक्षिण–पूर्व में ग्वालियर और पूर्व में धौलपुर रियासतों से घिरा हुआ। करौली में मथुरा की ब्रज संस्कृति का अधिक प्रभाव रहा। 1348 ई. में जादोन यदुवंशी यादव अर्जुन देवपाल ने कल्याणीपुर नगर बसाया जो कालान्तर में करौली नाम से जाना गया। अर्जुन देवपाल ने महाराजा की उपाधि धारण की।[1] इसके बाद करौली का

* प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, महुकला, गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर, राजस्थान।

विस्तार उत्तरोत्तर होता गया। भद्रावती नदी पर स्थित होने के कारण इसे भद्रावती नगरी भी कहा जाता है। करौली राज्य चारों ओर से लाल पत्थर से निर्मित है। धर्म–निरपेक्षता सहिष्णुता व समन्वयता को आस्था के केन्द्र करौली रियासत में हिन्दू वैष्णव मन्दिर, जैन मन्दिर, अजन्जनी माता का मन्दिर व गोविन्द देवजी के मन्दिर तथा जामा मस्जिद ईदगाह धार्मिक आस्था के प्रतीक है। पहाड़ी क्षेत्र के कारण इस राज्य में सर्वत्र पत्थर की खाने पाई जाती है। करौली का डांग क्षेत्र पत्थरों पर जालीदार नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है। करौली के प्राकृतिक वातावरण में विंध्यांचल और अरावली पर्वत सम्मिलित है। मैदानी इलाके उपजाऊ है और मिट्टी हल्की और रेतीली है। यहाँ की उत्कृष्ट वास्तुकला संस्कृति की प्रतीकात्मक बहुआयामी है।[2]

करौली क्षेत्र को चार धाम की यात्रा का क्षेत्र कहा जाता है। कैला देवी मन्दिर, कृष्ण मन्दिर महेन्दीपुर बालाजी मन्दिर रोड़ा भीम, अंजनी माता मन्दिर नादेड़ भूमिया मन्दिर, करौली, हिण्डोन सिटी में – नरसिंह मन्दिर, कवर्घा हनुमान जी मन्दिर, गोमती घाना, हरदेव जी महाराज मन्दिर, राधा रमण मन्दिर तथा जैन सम्प्रदाय का जी महावीर जी का मन्दिर यहाँ का पर्यटन समृद्ध व उन्नत है। धार्मिक स्थल का चिन्तन एवं दृष्टि मूलतः अध्यात्म प्रधान है।[3]

कैला देवी मन्दिर

कालीसिल नदी को इर्द–गिर्द त्रिकूट पहाड़ियों में बनास नदी की एक सहायक तट पर कैला नामक गाँव के उत्तर–पश्चिम में स्थित है। यह मन्दिर टुटेलरी देवता, देवी कैला देवी को समर्पित है। संगमरमर पत्थर से चौकोर मंजिल के बड़े प्रांगण में स्थित है। यहाँ चाँदी की चौकी पर स्वर्ण छतरियों के नीचे विराजमान दो प्रतिमाऐं है। इनमें से एक का बाई और उसका मुँह झुका हुआ है कैला देवी की आठ भुजाएं है मन्दिर उत्तर भारत के प्रमुख शक्तिपीठ को रूप में ख्याति प्राप्त है। इस मन्दिर का निर्माण राजा भोजपाल ने 1600 ई. में करवाया। मान्यता है कि भगवान कृष्ण के पिता वासुदेव और देवकी को जेल में डालकर जिस कन्या योगमाया का वध मथुरा शासक कंस ने करना चाहा तो वह योगमाया कैरोली में कैला देवी के रूप में मन्दिर में विराजमान हैं। मातृशक्ति की मूर्ति कला के भव्य सौन्दर्य की अभिव्यक्ति को ही महत्व दिया गया। कैला देवी का वार्षिक मेला चैत्र (मार्च–अप्रैल) माह में आयोजित किया जाता है। यह 17 दिवसीय इस मेले में पदयात्री ध्वज लेकर लंगुरिया गीत गाते हैं। यह पर्व लक्की मेला के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहाँ भैरों व लंगुरिया को समर्पित छोटे मन्दिर भी इस आंगन में स्थित है। लाखों हिन्दू भक्त दशनार्थ आते है। यहाँ की संस्कृति मेलों, त्यौहारों एवं व्रत कथाओं मातृशक्ति आद्यशक्ति के रूप में निरूपित भक्ति का समावेश है। उत्तर भारत के प्रसिद्ध शक्तिपीठों में से एक इस मन्दिर का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। मन्दिर के बारे में कई मान्यताएं है इतिहासकारों के अनुसार वर्तमान में जो कैला ग्राम है वह करौली के यदुवंशी राजाओं के आधिपत्य में आने से पहले गागरोन के खींची राजपूतों के शासन में था। खींची राजा मुकन्ददास ने सन् 1116 में मन्दिर की सेवा, सुरक्षा का दायित्व राजकोष पर लेकर नियमित भोग–प्रसाद और ज्योत की व्यवस्था करवा दी थी राजा रघुदास ने लाल पत्थर से माता का मन्दिर बनवाया। स्थानीय करौली रियासत द्वारा उसके बाद नियमित रूप से मन्दिर प्रबन्धन का कार्य किया जाता रहा। मां कैलादेवी की मुख्य प्रतिमा के साथ मां चामुण्डा की प्रतिमा भी विराजमान है।[4]

मेहन्दीपुर बालाजी मन्दिर[5]

गीता में भगवान ने कहा है–''जब–जब धर्म की हानि होती है, तब–तब मेरी कोई शक्ति इस धरा–धाम पर अवतार लेकर भक्तो के दुःख दूर करती है और धर्म की स्थापना करती है।'' भक्त–भय–भंजन, मुनि–मन रंजन, अंजनीसुत श्री बालाजी महाराज जी का घाटा मेंहदीपुर में प्रादुर्भाव इसी उद्देश्य से हुआ है। मर्यादा पुरुषोत्म भगवान श्री राम जी ने परम प्रिय भक्त शिरोमणि पवनकुमार की सेवा भाव से प्रसन्न होकर उन्होने यह वरदान दिया –''हे पवनपुत्र ! कलियुग में तुम्हारी प्रधानदेव के रुप में पूजा होगी।'' घाटा मेंहदीपुर में भगवान महावीर बजरंग बली का प्रादुर्भाव वास्तव में इस युग का चमत्कार है।

श्री मेहंदीपुर बालाजी महाराज जी का धाम बहुत ही पावन और चमत्कारिक है। कलयुग में श्री बालाजी महाराज ही प्रधान देव के रूप में हैं। वर्तमान में यह स्थान जिला दौसा (राजस्थान) में श्री मेहंदीपुर बालाजी के नाम से प्रसिद्ध है। जोकि दो पहाड़ियों के बीच बसा है इसलिए दो पहाड़ियों के बीच होने से इन्हें घाटा मेहंदीपुर बालाजी भी कहा जाता है। हनुमान जी ही यहाँ बाल रूप में विधमान हैं। यहाँ श्री बालाजी महाराज, श्री भैरव बाबा जी एवं श्री प्रेतराज सरकार जी साक्षात् विराजमान हैं। श्री बालाजी महाराज के दरबार के सामने ही श्री सीताराम जी का दरबार है। श्री बालाजी महाराज सदा माता सीता जी एवं श्री राम जी का दर्शन करते रहते हैं। यहाँ श्री बालाजी महाराज अपने भक्तो के हर संकट को दूर करते है। यहाँ जो भी भक्त सच्चे मन से अर्जी लगाते हैं बाबा जी उनकी हर मनोकामना पूर्ण करते है। श्री राम दरबार जी के दरबार से कुछ दूरी पर श्री गणेशपुरी जी का समाधि स्थल है।

यह मन्दिर करौली जिले के टोड़ा भीम में स्थित है। यह मन्दिर दो जिलो करौली व दौसा के मध्य स्थित है। यहाँ भूत–प्रेत व दुष्ट आत्माओं के संकट से मुक्त करा जाता है। इनके करीब तीन पहाड़ पर अंजनी व काली माताजी का तथा सात पहाड़ पर पंचमुखी हनुमान व गणेश मन्दिर स्थित है।

श्री महावीर जी मन्दिर[6]

करौली के हिण्डौन सिटी में दिगम्बर जैनियों का प्रमुख पवित्र धार्मिक स्थल है जिसका पूर्व नाम चांदन गॉव था। गम्भीर नदी के तट पर स्थित इस मन्दिर में 24वें तीर्थंकर जी वर्धमान महावीर जी की मूर्ति विराजित है जो दया, प्रेम, करुणा व अहिंसा को प्रणेता है। यह मन्दिर प्राचीन जैन कला शैली में सफेद व लाल पत्थरों से निर्मित है जिसके चारों ओर छत्रियां बनी हुई है। गगनचुम्बी धवल–शिखर स्वर्ण–कलंशों से सज्जित है। जिस पर जैन–धर्म की ध्वजाएं सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र का संदेश दे रही है। मन्दिर की दीवारों पर पच्चीकारी का कलात्मक कार्य है। सफेद संगमरमर से भव्य मान स्तम्भ बनाया गया जिसमें श्री महावीर जी की मूर्ति स्थापित है। जिस चर्मकार ने इस मूर्ति को खोजा उसे ही छत्री पर चढ़ाया जाने वाला चढ़ावा उसके वंशजों को दिया जाता है। मार्च–अप्रैल में जैन पर्व महावीर जयन्ती मनाया जाता है। चैत्र शुक्ल त्रयोदशी से वैशाख कृष्ण द्वितीया तक पॉच दिवस लक्खी मेला (1 लाख तीर्थ यात्री आते है) भरता है, जिसका मुख्य आकर्षण रथयात्रा है। इसमें मीणा जाति के लोग मंजीरे बजाकर नाचते–झूमते है। इस रथ यात्रा के पश्चात ध्वजारोहण होता है और अनेक सांस्कृतिक भजन–पूजन के कार्यक्रम होते है। यह स्थान सामुदायिक सर्वधर्म सद्भाव का प्रतीक है। स्थापत्य व मूर्ति कला का विकास आत्म–स्वरूप के साक्षात्कार या उसे परम तत्व की ओर उन्मुख करने के लिए हुआ है। इस मन्दिर को मूर्त रूप देने में जैन श्रावक अमरचन्द बिलाला का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

सम्भवतः करौली हिरण्यकश्यप व भक्त प्रहलाद की कर्म भूमि रही है यहाँ पर नृसिंह मन्दिर, प्रहलाद कुण्ड हिरण्यकश्यप के महल, बावड़ियों को अवशेष है। महाभारत कालीन हिडिम्बा नामक राक्षसी की कर्मस्थली होने के संकेत भी प्राप्त होते हैं। हिडिम्बा का अपभ्रंश हिण्डोन बन गया।[7]

जामा मस्जिद

मुस्लिम समाज के अनुयायियों के लिए करौली के ढ़ोलीखार में 1901 ई. में जामा मस्जिद का निर्माण करवाया गया जहाँ ईद पर्व पर नमाज अदा की जाती है। भौगोलिक दृष्टि से अरावली पर्वत श्रृंखलाओं की तलहटी में बसा करौली आकर्षित व लुभावना है। स्थापत्य कला व नगर नियोजन का बेजोड़ उदाहरण है। जलवायु, सुखद तथा प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण होने के कारण धार्मिक सौहार्दता का पर्यटक स्थल बन गया यहाँ के दर्शनीय स्थानों की अधिकता और विशालता है। करौली केवल ऐतिहासिक व धार्मिक महत्व ही नहीं अपितु पौराणिक और सांस्कृतिक महत्व से ओतप्रोत है।

पर्यटन ने करौली की अर्थव्यवस्था में व्यापार–वाणिज्य समृद्ध हुआ जिससे सामाजिक सांस्कृतिक व आर्थिक मूल्यों के प्रति तीर्थ समुदाय जागरूक होकर संस्कृति के संरक्षण में महती भूमिका रही। धार्मिक पर्यटन

का पर्याय तीर्थ पर्यटन का हिन्दू संस्कृति और हिन्दू धर्म में विशेष महत्व है। इसलिए हिन्दू धर्म से संबंधित हर जन जाति के मनुष्य की इच्छा रहती है कि वह अपने जीवन में भारत के सभी तीर्थो के दर्शन करके अपने जीवन को सफल करे। जिसके लिए मनुष्य अपना घर बार बच्चे छोडकर पर्यटन पर निकल जाता है, कभी कभी तो वह अपने जीवन भर की सारी सम्पत्ति को भी एक बार में न्यौछावर करने के लिए तैयार हो जाता है। सवाल यह उठता है कि तीर्थो में ऐसा क्या है। जिसके लिए मनुष्य यह त्याग और बलिदान देने के लिए तैयार हो जाता है। और इस त्याग और बलिदान की परंपरा प्राचीन समय से चली आ रही है।

तीर्थ का अर्थ

"तीर्थ" शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है जिसमें "ती" शब्द का अर्थ तीन और "र्थ" शब्द से तात्पर्य अर्थ है। इस तरह से इसका अर्थ बनता है "तीन अर्थो की सिद्धि" यानि जिससे तीन पदार्थो की प्राप्ति हो उसे तीर्थ कहते है। संसार में मानव के जीवन के चार प्रमुख लक्ष्य माने जाते है। जिसको पूर्ण करने हेतु मनुष्य का पृथ्वी पर जन्म हुआ है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।[8]

इन चारो में अर्थ (धन) तो तीर्थ पर्यटन करने में खर्च होता है। अतः इसकी प्राप्ति तीर्थो में नहीं होती है। धन, राज–भोग, विलास इन सब की कर्मो से प्राप्ति होती है। धर्म, काम और मोक्ष इन तीनो की प्राप्ति तीर्थ पर्यटन से ही सम्भव है। धार्मिक पर्यटन करने से मनुष्य सात्विक होता है वो केवल मोक्ष के लिए तीर्थ पर्यटन करते है। जो व्यक्ति सात्विक और राजसी वृत्ति के है। वे धर्म के लिए तीर्थ पर्यटन करते है। और जो व्यक्ति केवल राजसी वृत्ति के है वे संसारिक और परलौकिक कामनाओ की सिद्धि के लिए तीर्थ पर्यटन करते है परंतु जो व्यक्ति निष्काम भाव से पर्यटन करते है। केवल उन्हें ही मोक्ष प्राप्त होता है। जो व्यक्ति सकाम भाव से तीर्थ पर्यटन करते है। उन्हे इस लोक में स्त्री–पुत्र आदि और परलोक में स्वर्ग की प्राप्ति होती है। परन्तु उन्हे मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता।

इस संसार में जितने भी धार्मिक पर्यटन स्थल है वे सभी भगवान और भक्तों के साथ ही बने है। कहने का अभिप्राय यह है कि भक्त बिना भगवान नहीं, भगवान बिना भक्त नहीं, और इन दोनो के बिना तीर्थ नहीं। तीर्थ पर्यटन का असली मकसद तो आत्मा का उद्धार करना है। इस लोक और परलोक के भोगो की प्राप्ति के लिए और भी बहुत से साधन है। इसलिए हर व्यक्ति को चाहिए कि वह भोगो की प्राप्ति के लिए तीर्थ पर्यटन न करे। बल्कि आत्मा के कल्याण के लिए तीर्थ पर्यटन करे। और जो लोग आत्मा के कल्याण के लिए श्रद्धा व भक्तिपूर्वक नियम का पालन करते हुए तीर्थ पर्यटन करते है। उसे मोक्ष की प्राप्ति के साथ अन्य लाभ भी होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- 1. गौड, रामसिंह; राजस्थान के धार्मिक स्थल; जयपुर, 1989 ई., पृष्ठ संख्या 2–4
- 2. बनर्जी, आर.सी; टूरिज्म इन राजस्थान, दिल्ली, 1992 ई., पृष्ठ संख्या 21
- 3. एडमिनीस्ट्रटिव रिपोर्ट ऑफ करौली स्टेट, 1938–39 ई., कलकत्ता, 1940 ई., पृष्ठ संख्या 70
- 4. शर्मा, निर्मल कुमार; हिस्ट्री ऑफ राजस्थान, टूरिज्म, उदयपुर, 2001 ई., पृष्ठ संख्या 12
- 5. कुमावत राधाशरण; राजस्थान में मातृ शक्तिपीठ बीकानेर, 1971 ई., पृष्ठ संख्या 16
- 6. जैन निर्मलचन्द सेठी राजस्थान के जैनालय, जोधपुर, 1980 ई., पृष्ठ संख्या 13
- 7. व्यास, सत्यनारायण हिण्डौन सिटी ऑफ राजस्थान, बीकानेर, 1992 ई. पृष्ठ संख्या 6
- 8. शर्मा, निर्मल कुमार; हिस्ट्री ऑफ राजस्थान, टूरिज्म, उदयपुर, 2001 ई., पृष्ठ संख्या 28

♦❐♦